

गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा लिखित पुस्तक

अन्तर-शुद्धि के सोपान

उद्धरण १७

भटकना मन की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। तथापि, साधक को इसके प्रति संवेदनशील बनना चाहिए और मन व हृदय को सही मार्ग पर वापस लाते रहना चाहिए।



© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

गुरुमाई चिद्विलासानन्द, अन्तर-शुद्धि के सोपान : दिव्य सद्गुणों का योग अध्याय ११ “शुद्ध हृदय,” से उद्धृत
[चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१३], पृ. १६५।